International Journal of Jyotish Research: 2017; 2(1): 09-12

International Journal of Jyotish Research
(वेदचक्षु)

ISSN: 2456-4427
Impact Factor: RJIF: 5.11
Jyotish 2017; 2(1): 09-12
© 2016 Jyotish
www.jyotishajournal.com
Received: 06-11-2016
Accepted: 05-12-2016

Deepti Tyagi
Research scholar, Maharshi Panini Sanskrit Evam Vedic Vishwavidyalaya (MPSVV), Ujjain, Madhya Pradesh, India

Correspondence
Deepti Tyagi
Research scholar, Maharshi Panini Sanskrit Evam Vedic Vishwavidyalaya (MPSVV), Ujjain, Madhya Pradesh, India

ज्योतिर्विज्ञान की दृष्टि से नेत्र रोग की उत्पत्ति व विश्लेषण

Deepti Tyagi

सारांश
नेत्र शरीर का वह अंग है जो विभिन्न उद्देश्यों के लिए प्रकाश से प्रतिक्रिया करता हैं | यह मानव के शरीर की एक इन्द्रिय हैं | आँखें अत्यंत जटिल ज्ञानेन्द्रियाँ हैं | आँख या नेत्रों के द्वारा हमें वस्तु का दृष्टिज्ञान होता है। दृष्टि एक जटिल प्रक्रिया है, जिसमें प्रकाश किरणों के प्रति संवेदिता, स्वरूप, दूरी, रंग आदि सभी का प्रत्यक्ष ज्ञान समाहित है। मानव शरीर में दो आँखे होती हैं | जो दायीं-बायीं दोनों ओर एक-एक नेत्र कोटरीय गुहा में स्थित रहती है। ये लगभग गोलाकार होती हैं तथा इन्हें नेत्रगोलक कहा जाता है। आँखों में फोटो रिसेप्टर होते हैं | जो कि प्रकाश को विद्युत सिग्नल में परिवर्तित करता हैं | फिर यह सिग्नल ऑप्टिक स्नायु मस्तिष्क में पहुँचता हैं और व्यक्ति को दृष्टि की अनुभूति होती हैं | दृष्टि वह संवेदन है, जिस पर मनुष्य सर्वाधिक निर्भर करता है। इसके सबसे गहरे भाग में एक गोल छिद्र (फोरामेन) होता है, जिसमें से होकर द्वितीय कपालीय तन्त्रिका (ऑप्टिक तन्त्रिका) का मार्ग बनता है। नेत्र के ऊपर व नीचे दो पलकें होती हैं। ये नेत्र की धूल के कणों से सुरक्षा करती हैं। नेत्र में ग्रन्थियाँ होती हैं। जिनके द्वारा पलक और आँख सदैव नम बनी रहती हैं। मनुष्य में अनेक प्रकार के नेत्र रोग होते हैं जैसे कि जन्म से अँधा होना, मोतियाबिंद होना, रात में दिखाई न देना, कभी किसी बिमारी से रोशनी चली या कम हो जाती है। ज्योतिर्विज्ञान में जन्मजात रोग के अलावा वात, पित्त व कफ से उत्पन्न होने वाले रोग शारीरिक एवं मानसिक रोगों के योग बतलाये गये हैं |

कूट शब्द: नेत्र रोग, ज्योतिष, मानव, नेत्र

1. प्रस्तावना
ऋग्वेद के अनुसार विराट पुरुष के मन से चंद्रमा, नेत्र से सूर्य, मुख से इंद्र, अग्नि एवं प्राण से वायु की उत्पत्ति कही गई हैं | इसलिए ज्योतिष शास्त्र में आँख का कारक सूर्य व चन्द्र को माना गया हैं | ये दोनों ग्रह ही प्रकाश कारक है होने कारण ये दोनों ही आँखों को प्रभावित करने वाले कारक हैं | नेत्र मानव शरीर का बहुत कोमल, सुन्दर अंग और महत्वपूर्ण ज्ञानेन्द्रीय हैं | नेत्रों के प्रमुख रोग कमजोर दृष्टि (मायोपिया), भेगापन, रेटिना सम्बन्धी और अंधापन आदि हैं | आयुर्वेद में आचार्य सुश्रुत ने 76 रोग माने हैं जबकि आचार्य माधव ने दो और रोग का उल्लेख किया अर्थात 78 रोग कहे माने हैं जबकि वाग्भट्ट ने इन रोगों की संख्या 94 बताई हैं |

2. शोध उद्देश्य व प्रविधि : प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य जन्म पत्रिका में नेत्र रोगों के विषय में समझने का प्रयास करना है |

प्रस्तुत शोध पत्र ज्योतिष शास्त्र, समीक्षात्मक पुस्तकें, शोध-पत्र एवं पत्रिकाओं में प्रकाशित लेख व रचनाओं में निहित या समाहित विचारों, दृष्टि तथा सुझावों पर आधारित है | जिसमें समस्त चिंतन एवं निरक्षण के उपरांत ज्योतिष द्वारा नेत्र रोगों का योगो को देख कर निष्कर्ष प्रस्तुत किये गये हैं |

3. पूर्ववर्ती शोध कार्यों का अध्ययन : प्रमुख ज्योतिष ग्रंथों में नेत्र व नेत्र रोगों के योग बृहत्पाराशर के अनुसार अध्याय 15 के 12 वें श्लोक में नेत्रों के विषयमें जिक्र करते हुए कहा है कि द्वितीयेश व द्वादशेश बलवान होकर शुभ भाव में स्थित हो तो मनुष्य सुन्दर नेत्रों वाला होता हैं | इसी अध्याय के श्लोक 15 में आँखों के विकार के बारे में कहा है कि द्वितीयेश शुक्र के साथ हो अथवा प्रथम व द्वितीय भाव में सूर्य व शुक्र हो तो मनुष्य की आँखों में कष्ट होता हैं | एक अन्य योग के अनुसार द्वितीय भाव में सूर्य व चंद्रमा स्थित हो तो मनुष्य निशान्ध अर्थात रत में अंधापन अनुभव करता हैं जबकि द्वितीयेश व लग्नेश सूर्य के साथ हो तो मनुष्य जन्म से अंधा होता हैं | जातकालन्कार के अध्याय 2 के श्लोक 6 के अनुसार यदि जन्म पत्रिका में शुक्र व चंद्रमा एक साथ 6/8/12 वे भाव में स्थित हो तो मनुष्य निशान्ध (रतौंधी) से ग्रस्त होता हैं | यदि शुक्र व सूर्य से युक्त लग्नेश 6/8/12 वे भाव में स्थित तो मनुष्य जन्मांध होता हैं | जातक पारिजात में अध्याय 11 के श्लोक में 65 से 68 तक नेत्रों के रोग के योग में बताया गया हैं कि -

- यदि शुक्र, चन्द्रमा और द्वितीय स्थान का स्वामी तीनों ग्रह एक साथ हो तो मनुष्य निशान्ध या रतौधी से ग्रस्त होता हैं |
- लग्नेश, द्वितीय, पंचमेश सप्तमेश 6/8/12 भाव में हो तथा लग्न से शुक्र का सम्बन्ध हो तो मनुष्य नेत्रहीन अर्थात अँधा होता हैं |
- यदि शुक्र पंचमेश और षष्ठेश के साथ लग्न में हो तो राजदण्ड से नेत्र नाश होता हैं |
- द्वितीयेश, मंगल, शनि और गुलिक एक साथ हो तो नेत्र रोग होता हैं तथा यदि द्वितीय भाव में एक से अधिक पाप ग्रह बैठे हो और शनि उन्हें देखता हो तो नेत्र रोग होता हैं |

4. ज्योतिर्विज्ञान की दृष्टि से नेत्र रोग का कारण : ज्योतिष के अनुसार किसी रोग की उत्पत्ति उस जातक के जन्म में राशि, भाव, ग्रह और नक्षत्र विशेष पर पाप ग्रहों की उपस्थिति, दृष्टि, युति एवं पाप ग्रह अधिष्ठित राशि के स्वामी द्वारा युति या दृष्टि होने पर होती हैं | जब बच्चा गर्भ में होता हैं तो उस समय पर ग्रहों से आने वाली किरणे माता के गर्भ को प्रभावित करती हैं | ब्रह्माण्ड में जो ग्रह बलवान होकर भ्रमण कर रहा होता है, उसी ग्रह के द्वारा प्रभावित हमारे शरीर का वह हिस्सा मजबूत हो जाता हैं, जिससे वह बनता हैं हमारा शरीर भौतिकीय पिण्ड सात ग्रहों से प्रभावित होता हैं | ग्रहों के अलावा 12 राशियों, 27 नक्षत्रों तथा 12 भावों पर भी शरीर के अंगों पर प्रभाव डालती हैं | सूर्य को प्रकाश का स्रोत माना गया हैं तथा जल तत्त्व होने के कारण चंद्रमा नेत्रों में नमी और पारदर्शिता बनाता हैं | बुध व शुक्र मज्जा तन्तुओं का कारक नेत्रों के लिए सहकारक कार्य करता हैं | इस प्रकार ज्योतिषीय दृष्टि से देखा जाए तो नेत्रों की संरचना, दृष्टि और मोहकता हेतु सूर्य, चन्द्रमा, बुध व शुक्र ग्रोन का विशेष योगदान हैं | जन्मपत्री में बने बारह भावों से शरीर के अंगों की कल्पना की जाये तो प्रथम भाव सम्पूर्ण शरीर का कारक, द्वितीय भाव दायी आंख का और द्वादश भाव बायीं आँख का कारक हैं | इन भावों के अलावा छठे व आठवे भावों से नेत्र व नेत्र रोगों का विचार किया जाता हैं |

5. नेत्र सम्बन्धी ज्योतिषीय योगों का परिक्षण

5.1 दिनांक 27 दिसम्बर 2003 समय 20:04 डबरा (ग्वालियर)

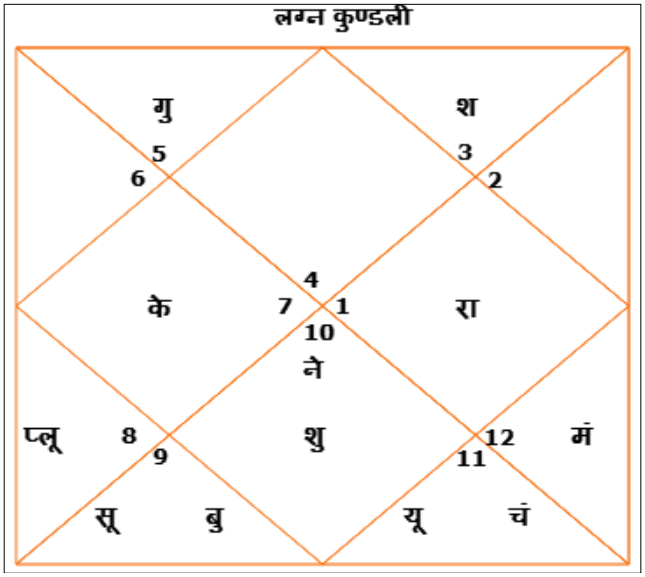

आकृति 1

- द्वितीय भाव में षष्ठेश गुरु और नेत्र के द्वादश भाव में शनि की स्थित हैं |
- द्वितीयेश सूर्य तथा द्वादशेश बुध षष्ठ भाव में स्थित है |
- द्वितीय भाव पर राहु की पंचम दृष्टि द्वादश भाव पर सूर्य मंगल की दृष्टि हैं |
- नेत्र कारक सूर्य षष्ठ तथा नेत्र कारक चंद्रमा अष्टम भाव में स्थित हैं |

इन्ही सब योगो के कारण यह व्यक्ति जन्म से अंधा हैं

5.2 दिनांक 21 अगस्त 1951 समय 2:04 A AM भोपाल

- द्वितीय भाव में षष्ठेश मंगल स्थित हैं
- नेत्र कारक सूर्य राहु से तथा अन्य नेत्र कारक चंद्रमा शनि से दृष्टि हैं |

इन्ही सब ग्रह योगों के कारण जातक जन्म के बाद शनै-शनै अंधा हो गया |

5.3 दिनांक 15 सितम्बर 1972 समय 7:12 A AM ग्वालियर

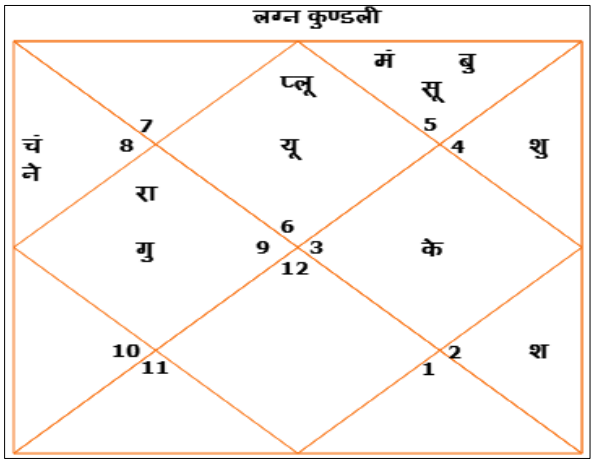

आकृति 2

- द्वितीयेश शुक्र केतु व द्वादशेश सूर्य मंगल युक्त हैं
- नेत्र कारक सूर्य मंगल से युक्त व चंद्रमा शनि से दृष्ट हैं|
- बारहवां भाव कालपुरुष का बायाँ नेत्र माना गया हैं | जन्मपत्रिका में बारहवें भाव पर दुर्घटना कारक मंगल अष्टमेश का दुष्प्रभाव हैं |

यही कारण हैं कि जातक की बायीं आँख दुर्घटना से क्षतिग्रस्त हो गई और बाएं नेत्र में रौशनी समाप्त हो गई |

5.4 दिनांक 12 अगस्त 1968 समय 10:20 A AM मेरठ

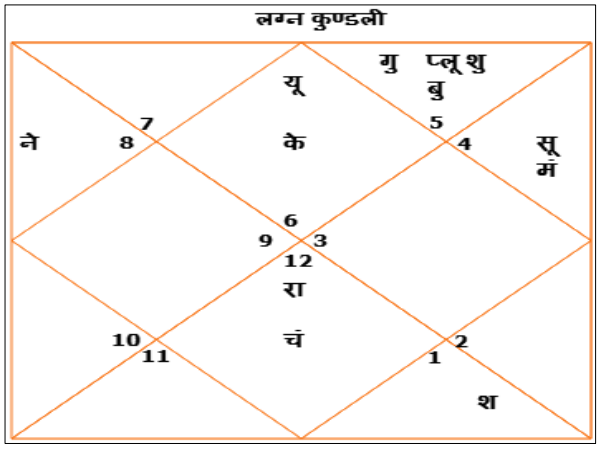

आकृति 3

- द्वितीय भाव पर षष्ठेश शनि तथा अष्ठमेश मंगल की दृष्टि हैं |
- द्वादशेश सूर्य की अष्ठमेश मंगल से युति तथा द्वितीयेश शुक्र द्वादश भाव में स्थित हैं |
- नेत्र कारक सूर्य मंगल युक्त व चंद्रमा राहु के साथ में हैं|

नेत्र ज्योति मंद हो गई |

5.5 दिनांक 11 नवम्बर 1994 समय 15:55 मुरादाबाद

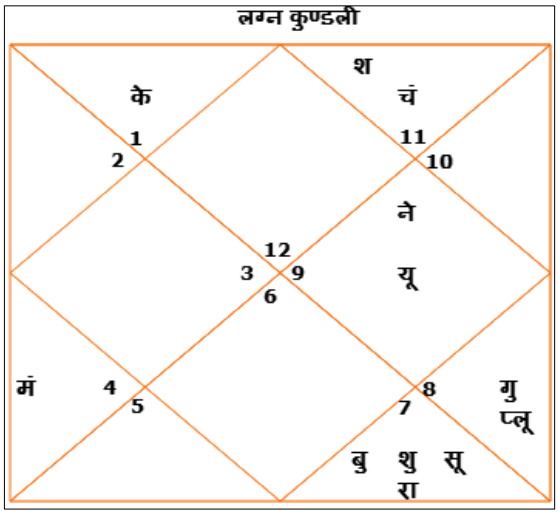

आकृति 4

- द्वितीय भाव में केतु तथा द्वादश भाव में शनि स्थित हैं|
- द्वादश भाव पर मंगल की दृष्टि तथा राहु की द्वादश व द्वितीय भाव दृष्टि हैं |
- द्वितीयेश मंगल नीच राशि में हैं यद्यपि इसका नीच भंग भी हो गया हैं पर शनि से षडाष्टक हैं |
- नेत्र कारक सूर्य अष्टम में हैं |

सम्भवतः केतु के दूसरे भाव में होने से दृष्टि में तिरछापन हैं क्योकि केतु व राहु दृष्टि स्थित में विचलन लती हैं अत: यह जातक भैगेपन का शिकार हैं |

6. निष्कर्ष

उपरोक्त दिए गए जन्म पत्रिकाओं के विश्लेषण से निम्नाकित तथ्य सामने आते हैं |

- द्वितीयेश भाव c द्वादश भाव पाप कष्ट युक्त
- द्वितीयेश व द्वादशेश पाप कष्ट युक्त
- द्वितीयेश व द्वादशेश 6/8/12 में स्थित हो
- षष्ठेश व द्वादशेश का रोग कारक प्रभाव

इसलिए यदि किसी व्यक्ति की जन्म पत्रिका में यह योग hहो तो उसे नेत्र रोग होने की प्रबल सम्भवना रहती हैं ऐसे व्यक्ति को चकित्सा परामर्श द्वारा नेत्र परिक्षण का सुझाव देना चाहिए | वर्तमान युग में शल्य क्रिया द्वारा अंधेपन की

समस्या को दूर किया जा सकता हैं और मृत व्यक्ति की आँखों का अंधे व्यक्ति की आँखे में आरिपित कर उसे दृष्टि योग्य बनाया जा सकता हैं | आज चश्मा धारणकर मंद दृष्टिवाला व्यक्ति भी अपने आसानी से अपने सभी कार्य सुचारू रूप से करता हैं परन्तु प्राचीन काल में यह सम्भव नही था | अत: ज्योतिष जानने वाले को चाहिए कि उसे आज की सुविधाओं को ध्यान में रख कर ही फलादेश करे क्योकि इस शल्य क्रिया युग में वास्तविकता यह हैं कि नेत्र की ज्योति को पुन: प्राप्त किया जा सकता हैं | नेत्र रोग की और इंगित करने वाले ग्रहयोग यदि व्यक्ति की जन्म पत्रिका में विद्यमान होतो आवश्यकता है केवल उन पर ध्यान देने की ताकि आधुनिक चिकित्सा का समय रहते लाभ रोगी व्यक्ति को मिल सके |

7. सन्दर्भ ग्रन्थ

1. बृहत्पाराशर होराशास्त्र
2. जातकालन्कार
3. जातक पारिजात
4. वीरसिंहावलोक:
5. ज्योतिष में रोग विचार
6. फलदीपिका
7. मुहुर्तचिन्तामणि